श्री प्रसन्न वेंकटदास के कीर्तनों का इतर भारतीय

भाषाओं में भावानुवाद पुष्प गुच्छ– हिंदी

श्री प्रसन्न वेंकटदास के जीवन चरित्र और उन के विशेष कृति ‘ नारायण पंजरा ’ का हिंदी भावानुवाद

भावानुवादक : डा विठ्ठल कट्टि, नवी मुंबई

श्री प्रसन्न वेंकट प्रकाशन

15, मंत्रालय (प्रशांत नगर)

9वा बी मुख्यमार्ग, 17वा क्रोस

इसरो ले औट, बेंगलूरु 560078

दूर वाणि: 080-26665398 मोबैल– 9448011954

E mail: trust@prasannavenkatadasru.org

Rsk9651@yahoo.com

Website: www.prasannvenkatadasaru.org

सूचिकांक

पृष्ठ संख्या

1] प्रस्तावना ---------- 3

1.1] भक्ति मार्ग ---------- 4

1.2] दास साहित्य का सामान्य स्वरूप ----- 12

2] श्री प्रसन्न वेंकटदासजी के जीवन चरित्र----15

3] नारायण पंजरा (एक लघु परिचय) ------- 26

4] नारायण पंजरा (हिंदी में भावानुवाद) ------ 33

5] ग्रंथ ऋणी ---------- 48

हरिदास श्री प्रसन्न वेंकट्दासजी

(क्रि श 1680–1752)

1.0 प्रस्तावना

आदि मानव से आधुनिक मानव बनने का इस प्रवास बहुत रोचककारि है,क्यों कि मानव ने इस प्रयास में कष्ट–कठिणायें और सुख–आनंद के अहसास पाया.निसर्ग के साथ अपनी दोस्ती बनाई.इस निसर्ग के कार्यों के पीछे एक प्रचंड शक्ति को पहचाना, जिस को हम भगवान या देव मानते हैं. समय बिताते बिताते, जब भी मानव किसि प्रकार का संकष्ट में आता था, तब वह इस भगवान पर विश्वास रखकर, कष्ट मिटाने केलिऐ प्रार्थना करता था. कष्ट दूर हो रहते कारण, उनका विश्वास धृढ होता चल आया. यही मानव के आध्यात्मिक चिंतन का प्रक्रिया का शुरुवात है.प्रार्थना बल से महा चेतन के साथ मिलने का इच्छा प्रकट हुआ.तदनंतर विविध देवताओं का प्रसन्न करने का प्रयास में, यज्ञ याग जैसे कर्म विधियों का प्रचार हुआ.इस बात ऋग्वेद में सूचित हुआ है.कुछ समय के बाद, इस कर्म क्रियों के अज्ञान जनता में पैदा हुआ, और अतृप्ति का कारण बनगया.लोगों के मन वैदिक धर्म से बिदाई देकर बौद्ध और जैन धर्मों के तरफ

आकर्षण हुआ.देश के उत्तर और दक्षिण प्रान्तों में इन्हे राजाश्रय से उत्तेजन भी मिला था.फिर भी वैदिक धर्म का पालना, सारे देश के कुछ कुछ हिस्सों में दिखाया पडता था.दक्षिण के तमिल नाडु के सायनार और आळ्वा लोग वैदिक धर्म को बचाके रखे थे. 7 वा शतमान से 13 वा शतमान के भीतर में शंकर, रामानुज और मध्व इन महान आचार्यों से वैदिक धर्म को पुनश्चेतन प्राप्त हुआ, जिस में इस आचार्यत्र्यों ने भगवान के ज्ञान और उनपर भक्ति के बारे में जोर दिया.इस प्रकार के प्रक्रियां में लोगों के ध्यान भगवद्भक्ति के बाजु में पुनः मुड गया.

1.1 भक्ति मार्ग

जीवन में किसि प्रसंगो का कारण से निरुत्साह उत्पन्न होता है और उस स्थिति मनुष्य को विरक्त भाव में ले जाता है.धीरे मनुष्य वेदोक्त धर्माचरण पर मन लगाता है, जिस में निष्काम कर्माचरण पर आग्रह किया.विरक्त या वैराग्य अवस्था में भगवद्विषय पर चिंतन से अन्तःकरण शुद्धि पाइ जाति है.यह भगवान पर श्रद्धा व प्रेम के अंकुर को जन्म देता है.इस धृढ मन, जब भगवान पर केंद्रित हो जाता है, वही भक्ति कह जाति है. भगवद्भक्ति पर अनेक ज्ञानी महात्माओं अपने अभिमत व्यक्त किये हैं, जैसे कि,

१. **नारद सूत्र :** अमृत स्वरूप भगवान में उत्कट प्रेम ही भक्ति है.

२. **रामायण :** भगवान पर उत्कृष्ट सप्रेम ही भक्ति है.

३. **भागवत पुराण :** अपने आप को विस्मरण, और निस्वार्थ से भगवान पर प्रेम, भक्ति है.

४. **शांडिल्य ऋषि :** ईश्वर में अती अनुरुक्ति, भक्ति है.

५. **श्रीशंकराचार्य (788-820 AD)**: ईश्वर के निर्गुण और निराकार का ज्ञान को पहचाना और उनपर अखंड प्रेम व्यक्त करना ही भक्ति है.

६. **श्री रामानुजाचार्य (1017-1137 AD):** प्रति क्षण में भगवान का स्नेह पूर्ण ध्यान करना, भक्ति है.

७. **श्री मध्वाचार्य (1238-1317 AD)**: भगवान का ज्ञान पाने पर, उन्हे निस्वार्थ प्रेम करना ही मुक्ति मार्ग है. इस विचार पर विश्वास रखना ही भक्ति है.

भारत के आध्यात्मिक चिंतन इस निम्न अर्थ में भक्ति पर इस प्रकार कहना उचित लगता है.“ **संपूर्ण पारमार्थिक आनंद या भगवन साक्षात्कार का अनुभव केलिए असीमित, निस्वार्थ, धृढ विश्वास, भावपूर्ण सप्रेम, जब भक्त भगवान को समर्पित करता है,वही भक्ति होति है.**” भक्ति के नव विध रूपों के बारे में यह कहा है.

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पाद सेवनं।

अर्चनं वंदनं दास्यं सख्यमांत निवेदनं॥

इसलिऐ भगवद्भक्त को अंतिम आनंद पाने केलिए,भक्ति के नव विध रूपों को अनुष्ठान में लाना अवश्यक है.जो व्यक्ति अपने जीवन में इन सब भावों को कार्य में लाता है, उन्हे हरिदास या हरि सेवक कहा जाता है.यहां ईश – दास का परि कल्पना होति है.इस सब टिप्पणें पर अलग अलग संत लोग, अपने अपने ढंग में भगवान पर प्रेम भावनों को व्यक्त करते आये हैं.इस प्रकार हरिदास पंथ या भक्ति पंथ का इतिहास भारत में हझारों वर्ष से पुराना है.पद्म पुराण में भक्ति पंथ का उल्लेख इस प्रकार है.

उत्पन्ना द्राविडे साहं वृद्धिं कर्नाटके गता ।

क्वचित क्वचित महाराष्ट्रे गुर्जरे जीर्णतां गता ॥

उत्तर के गंगा सम क्षेत्र में प्रचलित रामायण और महाभारत से आधारित विश्णु भक्ति, बौद्ध और जैन धर्मों का भीकर परिणाम से नष्ट हो गई थी.दक्षिण में तमिल्नाडु के सायनार {शैव} आल्वा {वैष्णव} जनगण इस भक्ति मार्ग को, लौकिक और पारमार्थिक आनंद केलिए 10 वा शतमान के पूर्व में ही अपनाया, और प्रादेशिक भाषा तमिल में भाक्ति पूर्ण रचनाए लिख के भक्ति पंथ का प्रचार किए.7 वा शतमान से 13 शतमान के मध्यंतर काल में आचार्यत्रयों (सर्वश्री शंकर, रामानुज और मध्व) के महत्कार्य से वैदिक धर्म और भक्ति पंथ को पुष्टी मिली.श्री रामानुजाचार्य के वैदिक धर्म प्रचार का कार्यक्षेत्र में, समाज का विभिन्न जातियों के लोगों को, विष्णु भक्ति का एकही मंच पर लाये गये.धीरे धीरे इस का परिणाम कर्नाटाक में हुआ.12 वा शतमान में शिव शरणों में शिव भक्ति का अनुकरण हुआ.वे मत से वीरशैव थे.जात पात नहीं था.इस भक्ति पंथ को आगे बढानेवाले में सर्वश्री अल्लम प्रभु, बसवेश्वर, अक्क महादेवी, मल्लिकार्जुन इत्यादि शिवभक्तों प्रमुख थे.इनके वचन साहित्य, कन्नड साहित्य को बडा योग दान दिया है.इस वीरशैव भक्ति पंथ 15 वा शतमान में अपना अदृश का अनुभव पाया.

एक आश्चर्य की बात है कि, तमिल नाडु में हरि हर भक्ति एक ही समय में उज्वल होती हुई दिखाइ पडी,किंतु कर्नाटक में वही हरि हर भक्ति विभिन्न काल में प्रचार में थी.शैव

भक्ति 12 से 13 शतमान में उज्वल थी तो, पारंपरिक हरि भक्ति 15 से 18 वा शतमान में शिखर पर पहुंची थी.यहां श्री मध्वाचार्य के द्वैत मत को अपनाए अनेक हरिदास गण हरि भक्ति का प्रचार किये.इनके रचनाएं में कीर्तने, सुळादियां, उहाभोग शामिल हैं.हरिदास भक्ति पंथ प्रक्रिया का शुरुवात का कारण पुरुष श्री मध्वाचार्य को जाता है. यह कहा जाता है कि, हरि भक्ति मे सर्व प्रथम नाम आता है रामायण के श्री हनुमान की.द्वैत वैष्णव लोग श्री मध्वाचार्य को हनुमान (वायुदेव) के तृतीय अवतार माना जाते हैं.द्वितीय अवतार है महाभारत के श्री भीमसेन.इसलिए हरि भक्ति पंथ के सर्व हरिदास गण श्री मध्वाचार्य के अनुयायि थे.हरिदास साहित्य दो अन्य समय में उज्वल होता हुआ दिखाया पडा है. 15 से 16 शतमान में पहिला शिखर और दूसरा 17 से 18 शतमान में दुसरा दिखाया पडा है.प्रथम अध्याय में श्री नरहरितीर्थ(श्री मध्वाचार्य के नेर शिष्य),श्री श्रीपादराजतीर्थ, श्रीव्यासराजतीर्थ, श्रीवादिराजतीर्थ,श्री पुरंदरदासरु, श्रीकनकदासरु, श्री वैकुंठदासरु शमिल हैं.इन संतों के रचनाए सरल कन्नड भाषा में लोगोंके दिल पहुंचने में यशस्वी हुए.उस समय में सारे दक्षिण प्रदेश में, विजयनगर एक हिन्दु साम्राज्य था, और इस भक्ति पंथ को बढावा देने में एक महत्वपूर्ण कार्य निभाया. दुर्दैव से इस साम्राज्य सन 1565 A D में उत्तर कर्नाटक के विजापुर के बहमनि सुल्तान के हाथ में पतन हुए के कारण इस भक्ति पंथ का अवनति शुरु हुआ.राजकीय अनिश्चित और मुसलमानों का अत्याचार अवनति

का दुसरे कारण हो सकता है. किंतु इस मध्यंतर में, भक्ति पंथ को सदैव जीवित रखने में उत्तर कर्नाटक के श्री महीपतिदास (1611-1681 A D) और उन के पुत्र श्री कृष्णदास के योगदान स्मरणीय है.महिपतिदास विजापुर के बहमनि राज्य कारभार में जुडे हुऍ थे.उसी समय में सुप्रसिद्ध मध्व वैष्णव संत श्री राघवेंद्रस्वामी (1596-1671 A D) इस भक्ति पंथ को आगे बढाने में महत्कार्य किये,और आगेवाले पीडियों को प्रेरणा शक्ति भी बन गए.

ऐतिहासिक घटनाओं को अवलोकन किया तो इस बात समझता है कि, 17 वा शतमान का शुरुवात में उत्तर कर्नाटक में राजकीय दुस्थिति उत्पन्न हुआ था.उस का भूप्रदेश बहमनि के विजापुर, गुल्बर्गा और बीदर राज्यो में बांटा हुआ था.इस के शिवाय, मराठा शिवाजि का हिन्दु राज्य परिकल्पना और मोघल सुल्तान का दूर दृष्ठि, ये सब व्यक्त हुए थे.पश्चात मोघल के औरंगजेब का मृत्यु तथा मराठा राज्य का उन्नति, लोगो में एक तरह का आशा दिखाइ पडी.श्री तुकाराम, श्री रामदास और श्री राघवेंद्रस्वामिजी के नेत्रत्व में जनता को भक्ति पंथ का नया मार्गदर्शन मिला.श्री राघवेंद्रस्वामिजी के प्रेरणा से कर्नाटक में विजयदास और प्रसन्न वेंकटदास स्वतः स्वतंत्र से अपने कार्य निभाए.श्री विजयदास अपने शिष्यों के साथ, खोए हुए पूर्व का हरि दास साहित्य का खोज करने का प्रयास किये.श्री पुरंदरदास

के असीमित रचनाओं को ढुंड लिये.यह एक महत्वपूर्ण कार्य है.इस के पश्चात वे स्वतः अनेक रचनाएं बनाए, जिसमें कीर्तनें, सुळादियां और उगाभोगें शामिल हैं.उन के प्रतिष्ठित शिष्यों मे श्री गोपलदास, श्री जगन्नाथदास, श्री मोहनदास, श्री प्राणेशदास और अनेक लोग शामिल हैं, जो इस हरि भक्ति परंपरा को शिखर पर पहुंचने में यशस्वी थे.

हरि भक्ति पंथ को प्रचार करने का दुसरा प्रवाह में,उत्तर कर्नाटक के बागलकोट गांव के प्रसन्न वेंकटदास के नाम आता है.वे श्री विजयदास के समकालीन भी थे.श्री विजयदास जैसे उनको शिष्य गण नहीं था.फिर भी अपने साहित्य रचने का साथ, पूर्व दास साहित्य का सेवा की.वे श्री पुरंदरदास से प्रभावित भी थे.इन के साहित्य में कीर्तनें, सुळादियां उगाभोग के व्यतिरिक्त अनेक खंड काव्ययां शमिल हैं.

इस प्रकार से भक्ति पंथ कर्नाटक में वृद्धि पाइ.जब कर्नाटक में 13 वा शतमान में शिव शरणों का शिव भक्ति, और 15 वा शतमान में हरिदासों का हरि भक्ति प्रचार में थे, तब महाराष्ट्र में संत ज्ञानदेव (1275 -1296 A D) नामदेव (1270 – 1350 A D) दोरे कुंबार, जनाबाइ तथा अनेक संत लोग अभंग रचनाएं किए. पंढरपुर के विठ्ठल सब संतों का आराधक देव है.एकनाथ (1533 – 1598), तुकाराम (1598 -1650) विठ्ठल भक्ति को अभुत उन्नत स्थिति में पहुंचे थे.17 वा शतमान का संत

श्री रामदास (1608 – 1681) महाराष्ट्र के आखरि प्रसिद्ध संत माने जाते हैं.इस्लिए महाराश्ट्र का भक्ति पंथ के बारे में क्वचित शब्द उल्लेख किया है.

गुजरात के संतों में श्री नरसिंह मेहता प्रमुख थे.राजस्तान के संत मीराबाइ उत्तर के बृंदावन से जुडि हुइ थी, और उन की रचनाएं हिन्दि भाषा में प्रचलित हैं.हिन्दि भक्ति साहित्य का सुवर्ण युग, 14 वा शतमान से 17 वा शतमान तक था.सर्वश्री कबीरदास, सूर दास, मीराबाइ और तुलसीदास प्रसिद्ध हरि भक्त माने जाते हैं.कबीर के राम–विष्नु भक्ति, सूर और मीरा के कृष्ण भक्ति, और तुलसि के राम भक्ति पर अनेक रचनाएं, हिंदी और अन्य प्राकृत भाषाओं में अब भी प्रचार में हैं.

पूर्व का बंगाल प्रांत में भक्ति पंथ को प्रचार में कृष्ण भक्त चैतन्य प्रभु (1485 – 11533 A D) के पात्र वर्णनीय है.उन के शिष्य गण में रूप गोस्वामि, सनातन गोस्वामि इत्यादि संत लोग इस भक्ति पंथ को और आगे बढाए.उत्तर के राज्यों में विष्णु भक्ति को पुष्ठि देके, प्रचार करने का योगदान में सर्वश्री वल्लभाचार्य और रामानंद व्यक्तियों का योगदान,भुलना असंभव और अशक्य है.किंतु इन दोनों के मूल प्रदेश दक्षिण देश है.श्रीरामानंद श्री रामानुजाचार्य के शिष्य थे. इसलिए

भक्ति द्राविडि,उपजि लावे रामानंद ।

परगटकरी कबीरने सात द्वीप सौखंड ॥

उपर लिखित उक्तियों से यह साबित होता है कि पद्म पुराण का वाक्य **"उत्पन्ना द्रविडे ––– जीर्णतां गता"** का साकार,कलियुग में निश्चित रूप से हुआ.

1.2 दास साहित्य का सामान्य स्वरूप

कन्नड भाषा के उज्वल साहित्य के तवनिधियों में दास साहित्य एक है.सामान्य जनता को क्लिष्ट और आध्यात्मिक ज्ञान पहुंचने में शिवशरण लोगों का वचन साहित्य और हरि दासों का दास साहित्य बहुत यशस्वी हुए हैं.अपने मधुर गायनों से जन पर नितांत और निरंतर प्रभाव करने का जन सम्मुखिता दास साहित्य का प्रमुख लक्षण है.

दास साहित्य का पार्श्वभूमिका श्री मध्वाचार्य के द्वैत मत रहने से, उनके विचार द्वैत मत के उन्नतीकरण स्वाभविक है.फिर भी, लोगों में दैव भक्ति और नीति प्रतिपादन करना उस का पहचान है.सर्व सामान्य मानव मौल्यों पर, हरिदास लोग जोर देते हैं.सामाजिक समन्वय अनुकरण में कठिण रहने से, उसके उपर दास साहित्य ज्यादा नहीं कहता है.किंतु मानवता प्रेम बढाने में यह प्रतिपादन करता है.इसलिए दास साहित्य को मत साहित्य नहिं कहा जाता है. आध्यात्मिक दृष्टि में,सर्व सामान्य का संपूर्ण लौकिक और पारमार्थिक आनंद केलिए, संसार

छोडकर अरण्य में जीवन बिताना और एकांत में भगवध्यान करने का उल्लेख है.किंतु दास साहित्य इस विचार से असहमत है. भव संसार में रहते ही न रहने का दावा करता है.इस का अभ्यास से जीवन मुक्ति मिलने का विश्वास देता है.हरिदास लोग जीवन पर्यंत भगवान में श्रद्धा रखते हैं.वे तार्किक, भक्त और ज्ञानी थे, पश्चात वे राग द्वेषों से दूर थे.

हरिदासों के रचनाएं में तीन प्रकारें हैं,जैसे कि 1] कीर्तन 2] सुळादि 3] उगाभोग.

1] कीर्तन: हर कीर्तन में पल्लवी, अनु पल्लवी और छंदे होते हैं पल्लवी अनुपल्लवी में कीर्तन का सारांश व्यक्त किया जाता है. यहां मात्रा से लय को जादा जोर दे जाते हैं.संपूर्ण राग और ताळ के समन्वय से कीर्तन को गाना, जरूरी है.छंदों के संख्या निर्दिष्ट नहीं रहता है.गीत का अंत में अंकितनाम रखना अवश्य है.हमेशा अंकितनाम से हरिदास के पहचान बनाया जाता है.कुछ कीर्तनाएं में, षट्पदि, चौपदि और सांगत्य इन छंदसों, दिखाइ पडते हैं.देव पूजा के समय में, भगवान को संगीत सेवा अर्पण करने का प्रक्रिया में, श्री श्रीपादराजजी ने कीर्तन को उपयोग करने का शुरुवात किया.इसलिए कीर्तनों के साथ संगीत जुडी हुइ है.श्री पुरंदरदासजी, बिगडले दक्षिण संगीत को एक नया रूप दिये.इसलिए श्री पुरंदरदासजी को कर्नाटक संगीत कुल पितामह

का पुरस्कार दिया गया है.संगीत प्राधान्य कीर्तन को नाट्य रूप में भावांतर करने का प्रयास करते आये हैं.

2] सुळादि: सुळादि 'सूडादि' रूप का अपभ्रंश है.इस का नेर अर्थ, शुद्ध मार्ग है.सप्त ताळ में एक ताळ उपयोग कर के गाने में रचित पद्य को भी सुळादि कहा जाता है.इस में गद्य और पद्य का जोडना, हो सकता है.एक ताळ में अनेक रागों को इस्तमाल करने के बारे में श्री पादराज और श्री पुरंदरदास टिप्पणि बनाए.श्री विजयदास एक अप्रतिम सुळादिकार थे.

3] उगाभोग: उगाभोग श्ब्द उदगाळ और आभोग इन दो शब्दों का मिलन से बनाया है.रचना के प्रारंभ में उद्गाह भाव, और अंत में आभोग प्रक्रिया होते हैं.उद्गाह, मेलापक, ध्रुव अंतरा और आभोग ये पांच उगाभोग धातुएं होते हैं.

हरिदास साहित्य का भाषा बहुत सरळ होने के कारण, सामान्य जनता उसे जानकर पाता है.धर्माचरण को जल्द समझाने केलिए देसि शब्दों का प्रयोग किया जाता है.अंत में यह कह जा सकता है कि, विषय, रूप, भाषा में दास साहित्य एक विशिष्ट कांतीयुक्त होने के पश्चात, भक्तलोग, हरिदास साहित्य का प्रतिपादित विषय की अनुकरण कर के, एक शांती पूर्ण समृद्धि समाज बनवा सकते हैं.

2. श्री प्रसन्न वेंकटदासजी के जीवन चरित्र

श्री प्रसन्नवेंकटदासजी का जन्म, उत्तर कर्नाटक में कुष्णा नदि का उपनदि घटप्रभा के तट पर बागलकोट गांव के प्रमुख सांप्रदाय मध्व वैष्णव कुटुंब में, क्रि श 1680 में हुआ.इन का बचपन का नाम वेंकटेश था,किंतु सब लोग स्नेह से उन्हे 'वेंकण्णा' बुलाते थे.उन का माता–पिता का नाम क्रमशः लक्ष्मीबाई एवम नरसप्पा था.नरसप्पा एक वैदिक मध्व शास्त्र में निपुण विद्वान थे.माता लक्ष्मीबाई साध्वि थी, जो तिरुपति श्री वेंकटेश्वर के महा भक्त भी थी.इन के पूर्वज लोग विजापुर से तीस मील के भीतर में काखंडकि गांव के थे.काखंडकि हरि दास पंथ के प्रसिद्ध श्री महिपति दास और उनके पुत्र श्री कृष्णदास को आश्रय दिया था.17 वा शतमान में मोघल का आक्रमण से कई हिंदु लोगों को कष्ट पहुंचा, जिस से नरसप्पा को काखंडकि गांव छोडना पडा. नरसप्पा सब परिवार के साथ, मराठा सुबेदार का नियंत्रण बने हुए बागलकोट को रवाना किये.इन के पहले पुत्र राघवेंद्र को वेदांत शास्त्र और वैदिक वृत्ति का शिक्षण, पास में हुए गुरुकुल में हुआ.कुछ समय के उपरांत नरसप्पा दंपतियों को, वृद्ध पूर्व सालों में वेंकण्णा पैदा हुआ.नरसप्पा को अपने वृद्ध वय

पहचान में, वेंकण्णा के शिक्षण के बारे में चिंता थी.परंतु वे व्यक्त न कर के, संपूर्ण विश्वास से कुल देवता श्री वेंकटपति पर छोड दिये.वेंकण्णा के बचपन में मा लक्ष्मीबाइ अपने पुत्र को यह विचार सौंप दिया कि, भगवान वेंकटपति ही सब का माता पिता है.लक्ष्मीबाइ हमेशा अनेक किर्तने गाती थी, और उनके अर्थ को पुत्र वेंकण्णा को समझाति थी.मा के अनेक घरकामों में वेंकण्णा हिस्सा लेता था.नरसप्पा ने वेंकण्णा का उपनयन संस्कार कर दिया.मा लक्ष्मीबाइ का आरोग्य में अचानक आपत्ति आइ और एक दिन वे गुजर गई. नरसप्पा को बडा चोट पहुंचा, और वे भी कुछ ही समय में निधन हो गये.दोनों राघवेंद्र और वेंकण्णा अनाथ बन गए.घर के जिम्मेदारि उनके बडे भाई राघवेंद्र को निभानी पडी.रिस्तेदार और पडोसियों के सहायता से राघवेंद्र कि शादि एक द्वैत परिवार के कावेरि नाम का एक लडकी की साथ हुइ.भाई और भाभी अपने नये जीवन में मग्न हो गये थे.इस कारण से वेंकण्णा के लौकिक शिक्षण में रुकावट आ गई.वेंकण्णा को बाल्यकाल में माता–पिता से सीखें कुछ श्लोक और देवताओं के कुछ स्तोत्र छोडकर, कुछ भी नहीं आता था.पौरोहित्य तथा वैदिक कर्मो करवाने के लिए जब भी बडा भाई बाहर जाता था, तब पीछे से वेंकण्णा की क्रूर भाभी घरके का सारे कामकाज उन्हे को लगा देती थी.घर के कामों के अलावा वेंकण्णा को घर की गाय और अन्य पालतू पशुओं को लेकर जंगल में चराने के लिए भेजा जाता था.गुरुकुल शिक्षण

का लभ्य वेंकण्णा को नहीं मिला.वेंकण्णा को दो वक्त की खाना भी अच्छी नहीं मिलती थी.यह बात राघवेंद्र का नजर में नहीं आया.इस प्रकार से आतंकों का अनुभव को अपने योग्य संस्कार बल से सहन करते वेंकण्णा रहता था. इस प्रकार से रहने में एक दिन गर्मी के मौसम में दोपहर के समय पर जब काम करके, थका हुआ घर लौटा रहा था, और अपनी भाभी से छाछ मांगा तो, भाभी ने वेंकण्णा से कहा " तुम्हारा जीवन ही व्यर्थ है,और तुम जैसे बच्चे को पालना अती व्यर्थ है" ऐसे भाभी के द्वारा कहे गए इस प्रकार के कठोर शब्दों से वेंकण्णा के बालमन में गहरी चोट पहुंची और वेंकण्णा अंदर तक हिल गया.उसके मन में घर को छोडकर कहीं ओर नए जीवन में चले जाने की इच्छा प्रकट हुई. यही उनका नये जीवन का प्रेरणाा बन गया.इस प्रकार के संतप्त दुखी जीवन और अवस्था को छोडकर, केवल भगवान श्री वेंकटनाथजी ही संरक्षक, ऐसे भरोसे मैं वेंकण्णा ने अपना गांव, घर और घर के बंधु–बांधवों को भी छोडने का निश्चय किया.घर छोडने के पश्चात वेंकण्णा ने सीधा तिरुपति जाने का रास्ता पकड लिया.भगवान बालाजी के प्रेरणा से रास्ते मे तिरुपति जानेवाले एक भक्तगणों की टोली से वेंकण्णा को परिचय हुआ. मार्ग में सत संग का भजन कीर्तन चलते थे, जिन के प्रभाव से वेंकण्णा का मन हल्का होने लगा, धीरे–धीरे इस प्रकार से दैविक माहोल का आनंद लेते हुए यात्रा चल रही थी, और वेंकण्णा का भारी मन पूरी तरह से हल्का हो गया.जिस भारी

मन से वह घर से निकला था.उनकी चिंता लगभग समाप्त हो गई.

तिरुपति पहुंचते ही, वहां का कपिलतीर्थ और भारत देश के पूर्वी घाट की पहाडियों में फैले हुए पर्वतीय प्रदेश का दृश को देखकर,वेंकण्णा का मन बहुत प्रसन्न (खुश) हुआ. सप्तगिरि या सप्त पर्वतों के उपर तट तिरुमल में भगवान श्री बालाजी विराजामान है.तिरुमल में पहुंचने के उपरांत, प्रादेशिक एवम पारंपरिक नियमों के अनुसार, वेंकण्णा स्वामी पुष्करणीतीर्थ में नहाया, और वहां विराजित शिव, हनुमान और वराह इत्यादि अन्य देवी देवतों का दर्शन किया.इसके बाद वेंकण्णा के मन मेंश्री वेंकटनाथजी के दर्शन करने की उत्सुकता बढ कर दुगुनी हो गई. "हरे श्रीनिवासा, हरे श्रीनिवासा" और " गोविंदा, गोविंदा" की गुंज से आप्लावित परिवेश में भक्तोंका साथ वेंकण्णा भी पूरे मन से शामिल होगया.जैसे ही वेंकण्णा भगवान बालाजी के गर्भ गृह के प्रवेश द्वार पर पहुंचा, और भगवान बालाजी के दर्शन लेने के लिए अपने दृष्टि भगवान के चरणों में लगाई, वेंकण्णा के मुख से भक्तिभरे शब्दें उत्पन्न हुए, "हे हरे श्रीनिवासा, अनाथ रक्षक, दीनबंधु, भक्तवत्सल, मैं आपके चरणों में पडा हूं".वेंकण्णा की आंखों से आंसुओं की धार छूट पडी.संपूर्ण समर्पण भाव से उसने साष्टांग नमस्कार किया.इस अवस्था में वेंकण्णा की जैसा सारी सूझ–बूझ समाप्त हो गई,

और वह अपने आपको भुल गया. वह वेंकण्णा का संपूर्ण समर्पण था.उस अवस्थामें एक आश्चयजनक घटना घटी.भगवान स्वयं बाल वेंकण्णा के शिर पर प्यार से स्पर्श किया और वेंकण्णा को अपने शंख चक्र गदा और पद्मों से विराजित मूल रूप दिखाया.वेंकण्णा को एक नये चैतन्य का स्वानुभव हुआ.भगवान ने वेंकण्णा की जिव्हा पर **"प्रसन्न वेंकट"** बीजाक्षर लिख दिया.इस भगवान के अनुग्रह से वेंकण्णा का शरीर में अभूतपूर्व उत्साह भर गया और वह अती प्रसन्न से नाचने लगा.उस के मूह से भक्ति भरि कीर्तन गाना निकल आया.वह था

" तप्पन्ने नोडदे बंदेया, एन्नय तंदे, अप्प तिरु वेंगळेश निर्दोषने-----"

भक्त का अनेक गलतीयों को न मानते, उन के पर दया दिखाता हुआ, दीन बंधु,दोषमुक्त भगवान के उपकार को स्मरण करते, अपने आभार व्यक्त कर दिया वेंकण्णा ने.उस समय के सम्मुखित, भक्त लोग वेंकण्णा का देव भक्ति का प्रशंसा किये.वेंकण्णा मंदिर में प्रदक्षिण करते करते नाचने लगा, और समर्पित भाव से गाया.वह कीर्तन इस प्रकार है.

"बिडेनो निन्नंघ्रि श्रीनिवास, एन्न दुड्डिसि कोळ्ळेलो श्रीनिवास निन्न नुडिये जितल्लो श्रीनिवास, नन्न नडेतप्पु कायो श्रीनिवास"

इस कीर्तन में आत्मार्पण, प्रार्थना तथा आध्यात्म विचारें भरे हुए हैं.इस में 'श्रिनिवास' शब्द चालीस बार पुनरुच्चार हुआ है, जिस से भगवान के नामोच्चरण स्वयं हो जाता है.इस संख्या आध्यात्मिक चिंतन से देखा तो, हम चालिस अवगुणों से जुडे हुए हैं, (वे हैं त्रिगुण–3,तत्वाएं–24,अरिषड्वर्गाएं–6,पंचमहापातें–5 और जनन/मरण–2 = कुल–40) जिस से छुटकारा केवेल नाम जप से शक्यता है.इसलिए यह कीर्तन लोगो में अभिभी बहुत प्रचलित है.उस समय से वेंकण्णा का मन में हरपल में उस घटणा का याद आता था.दुसरे दिन भगवान देवस्थान के अर्चकों के स्वप्न में बताया कि वेंकण्णा को विशेष रूप से मान सम्मान देकर सम्मानित करें.पश्चात मंदिर के अर्चकों के तरफ से वेंकण्णा को कल्याणोत्सव मंटप में विशेष सम्मान मिली.यह घाटना ही उनके उच्च जीवन का शुभारंभ था, और उन के जीवन में परिवर्तनकारी अध्याय था. अब भगवान के कृपा से, सर्वसाधारण वेंकण्णा,श्री प्रसन्न वेंकटदास बनगया तथा नए आविर्भाव के रूप में प्रकट होगया.

कुछ दिन के बाद, वेंकण्णा को भागवान श्री वेंकटनाथ स्वयम अपने गांव को लौटने का प्रस्ताव किया.भगवान के आज्ञानुसार श्री प्रसन्न वेंकटदासजी बागलकोट को लौटने की संकल्प की.जब तक श्री दासजी तिरुमल में थे, भागवान पर निर्मल मन से ध्यान में बैठना सामान्य हो गया था, तथा एक

अनुभवि हरि भक्त के तरह से भक्ति भरी कीर्तनों को निर्माण करने का शुरुवात किये.तिरुमल को छोडने का निर्दिष्ट दिन सामिप्य (पास) आतेही श्री दासजी अपने चैन को खो बैठे, और एक नया कविता उनसे प्रकट हुआ.वह है

“बिडलारे बिडलारे निन्न अडिदवरेय,

कोडु कंड्य अभय विडिदेम्मय तंदे”

यहां श्री प्रसन्न वेंकटदासजी भगवान का सामिप्य को छोडने केलिए इनकार करते उपरांत भगवान को आभय हस्त का याचना करते हैं.तिरुपति से निकलने का समय में उन के मन भारी हुआ था.परिणाम में और एक कीर्तन उन्होनें किये.वह है

“सलहु वेंकटरमण दयांबुधि, सलहु वेंकटरमण “

इधर भगवान के महान रूप और पहना हुआ वस्त्र, आभरणों का वर्णन करते हैं.तिरुपति छोडने के समय में भगवान को आनेवाले जीवन में कष्ट और गलतीयां होने का शक्यता से संरक्षण के लिए प्रार्थना करते हैं.रास्तेमें मुळबागिलु, हंपि और मंत्रालय ऐसे अन्य पुण्य क्षेत्रों का यात्रा किये. मंत्रालय, एक ऐसा स्तान है जिधर सारे मध्व वैष्णवों के गुरु, सुप्रसिद्ध संत श्री राघवेंद्र स्वामिजी समाधि लेके , वृंदावन में विराजमान हैं,और उधर स्थाइ मंचालम्मा, पंचमुखि मुख्य प्राणदेव के दर्शन लिए. एक

दिन सुबह मूल वृंदावन के दर्शन लेने के समय में,श्रीदासजीने एक सहज तथा सुंदर गीत बनाई.वह है

“एळु,श्री गुरुराया,बेळगायितु

धूळिदर्शन कोडिरि ई वेळे शिष्यरिगे”.

श्री राघवेंद्रस्वामिजी को सुप्रभात का नमस्कार करते हुए, विनम्रता से मार्गदर्शन के लिए निवेदन करते हैं.हाथोंहाथ व्रंदावन से श्री दासजी को संबोधित हुए आवाज सुनाया पडता है, जिस में श्री स्वामिजी मध्व तत्वशास्त्र का ज्ञान को कीर्तन रूप में सामान्य जनता को पहुंचने में यशस्वी होने के अभिव्यक्त किये.श्री गुरुजी के शुभाशिर्वाद तथा मंत्राक्षताएं स्वीकार कर के,रास्ते में निरंतर हरिनाम स्मरण करते अपने गांव के तरफ यात्रा किये.उस साल का माघ महिने में श्रीदासजी बागलकोट को पहुंचे.गांव का हनुमान मंदिर में वे हनुमान के मूर्ति के सामने प्रसन्न भाव से नाचते एक कीर्तन गायें वह था

“गेलिसु भव हनुमंता,खळजलदि ऒडवनाळ बलवंता.”

देव हनुमंता के गुण तथा हरि भक्ति के प्रशंसा करता हुआ इस कीर्तन के अंत में ‘प्रसन्न वेंकट’ अंकितनाम आते ही, मंदिर में जमा हुआ भक्त जन आश्चर्य होगयें, कि वे अब तक उस अंकितनाम सुना नहिं थे.विस्तार से समालोचने के पश्चात्, लोगों

को पता चला कि, श्री दासजी दुसरा व्यक्ति नहीं हैं बलकी गांव का वेंकण्णा है. वेंकण्णा हरि दास बन के गांव को लौट आने की समाचार वेम्कण्णा के भाई राघवेंद्र और भाभी कावेरि के कानों को पहुंचते, वेंकण्णा को मिलने केलिए वे दोनों दौड आए और शर्मिंदा व्यक्त किए.श्रीदासजी ने आभार पूर्वक उत्तर दिया, कि इस सब घटनाओंसे जीवन कि परिवर्तन मिलि है और सब भगवान के लीला और आधीन है.भाई और भाभी श्रीदासजी को घर लौटने का प्रस्ताव किये तो वे हरिदास वृत्ति धर्म को न छोडे, तथा सर्व समर्पण भाव से गुणगान किये. इसलिए एक् कीर्तन ऐसा है.

“निन्न महिमेयनारु बल्लरु, चिन्मयानंत रूपकने.”

बागलकोट के अपने पुराना घर में कुछ दिन तक देवपूजा और देव ध्यान में श्रीदासजी समय निकालते थे.‘गुरु के गुलाम न बनने से मुक्ति न मिलेगा’ इस पुरंदरदास वाणी में विश्वास रखे थे.इसलिए उन्होंने द्वैत शास्त्र के महा विद्वान पंडित श्री गलगलि मुदुगलाचार्य के पास में वैदकीय और आध्यात्मिक शिक्षण प्राप्त किया.बागलकोट से 15 कि मी दूर तुलसिगेरि गांव के देवता श्री तुलसिगिरेश (हनुमान) जी महाराज की सेवा करके अपने आध्यात्मिक जीवन की शुरुआत की.द्वैत मत प्रवर्तक श्री मध्वाचार्य के सिद्धांतको मनन कर समझा, और इस मत के मूल सिद्धांतको ध्यान में रखकर, सामान्य मनुष्यों को इन सिद्धांतों को

समझाने के लिए विशेषकर स्थानीय (प्रांतीय) भाषा कन्नड में, इन सिद्धांतों से संबंधित साहित्य की, रचनाएं लिखी. इनके द्वारा लिखित भागवान के कीर्तनें, सुळादि और अनेक खंडकाव्ययां सर्वसाधारण लोगो में अभी भी परंपरागत तरिके से प्रचलित हैं.श्रीदासजी के दुसरा कार्य स्तान था, बागलकोट से पच्चीस कि मी दूर पर रहता हुआ बादामी गांव का अगस्ततीर्थ.उधर वे एकांत में भगवध्यान और उपासना करते थे.भगवान में अपनी श्रद्धा, परिपूर्ण समर्पण, निस्सीम भक्ति, निष्काम कर्म औऱ निरंतर नाम जप से श्री प्रसन्नवेंकटदासजी ने भगवान श्रीवेंकटनाथजी का पुनः साक्षात्कार किया.

इनके साथ कुछ अलौकिक चमत्कारें भी जुडे हुए हैं, जैसे जंगलि क्रूर पशु शेर को नियंत्रित करना, एकही समय पर दो स्थानों में दिखाइ देना तथा अनेक प्रकार की लौकिक भविष्यवाणियां प्रमुख हैं.इस सब चमत्कारों को वे कभि भी न अपनाते थे.उन के एक ही उत्तर रहता था,कि यह सब विष्णु लीला है.श्री प्रसन्नवेंकटदासजी के खंडकाव्य संग्रह में महाभारत के शांतिपर्व में वर्णित विष्णुसहस्रनाम का कन्नड भाषानुवाद, श्रीमद्भागवत के दुसरे स्कंद का श्री कृष्णलीला, और छटवें स्कंद का नारायणपर्व का काव्यानुवाद शामिल हैं श्री प्रसन्नवेंकटदासजी के साहित्य सृष्टि में 603 कीर्तनें, 15 खंडकाव्य, 10 सुळादि, 19 उगाभोग, हैं. इस सब रचन्नाओं में

देवता स्तुतु, गुरु स्तुति, आत्मनिवेदन, लोकनीति, तत्व प्रतिपादन तथा संप्रदाय से संबंधित पारंपरिक रीति रिवाज, इत्यादी विषयों का समावेश दिखाई पडता है.

हाल ही में किए गए अनुसंधान से पता चल रहा है कि, वे भक्ति मार्ग का प्रचार के लिए, न केवल कर्नाटक प्रांत में दौरा किये, बल की सारा भारत के विभिन्न प्रदेशों का पर्यटण किए.उन के रचनाओं से अब जानकारी मिला है, कि वे पं्जाब तथा बंगाल प्रातों को यात्रा किए थे.यह आशा है कि, नया नया खोज कार्य इस दिशा में प्रकाश डाल सकता है.

श्री प्रसन्नवेंकटदासजी अपने वृद्धावस्थित समय आते ही,बादामी का अगस्त तीर्थ को अपने साधना स्तान चुनाए.भगवान पर चिंतन और ध्यान में बहुत समय बिताते थे.उन के काव्य लिखने का प्रबंध निरंतर रहता था. इस धरति पर महा पुण्य जीवन बिताकर श्री प्रसन्नवेंकटदासजी अपनी 71 वर्ष में अगस्त (ऋषि) तीथ स्थल कुंड के तट पर क्रि श 1782 या,शा श 1674 भाद्रपद शुक्ल पक्ष एकादशी तिथि को वैकुंठ वासी हुए.यह कहा जाता है कि **वे स्वयं रुद्रांश संभूत** थे.

3 नारायण पंजरा

(एक लघु परिचय)

भगवान श्रीव्यास महर्षि रचित 18 पुराणों में श्रीमद्भागवत श्रेष्ट पुराण माना जाता है.क्योंकि इस महापुराणको जो व्यक्ति (पुरुष/स्त्री) जीवन में मनन पूर्वक अनुष्टान करता है, उसको भव सागर (संसार) की पीडा से मुक्ति मिल जाती है.इस भागवत महापुराण के छटे स्कंद के एक भाग मे भगवान का गुणगान करता हुआ एक पर्व प्रकट होता है, जिसका नाम "नारायण पर्व" है.

एक बार देवराज इंद्र द्वारा अवमानना किए जाने के कारण, देवगुरु श्री ब्रहस्पति इंद्र सभा का त्याग कर अंतर्ध्यान हो गए.इसकी जानकारी असुर दल को प्राप्त होते ही असुरों द्वारा देवतां पर आक्रमण प्रारंभ हो गया, और देवता प्रमुख सुरेंद्र अत्यंत परेशानी में आ गया.ब्रहस्पति द्वारा त्याग देने के पश्चात इंद्र ने ब्रह्माजी की सहायता ले कर तत्काल नवीन गुरु के रूप में परम साधु श्री विश्वरूपाचार्यजी को देवगुरु के रूपमें सम्मानित किया.असुरों के बाधाओंको सामना करने के लिए जब सुरेंद्र श्री विश्वरूपाचार्य जी से आशीर्वाद प्राप्त करता है.तब श्री विश्वरूपाचार्यजी सुरेंद्र को आशीर्वाद के रूप में जगत्पालक,

सर्वोत्तम श्री नारायण स्तोत्र का उपदेश करते हैं.यह उपदेशात्मक स्तोत्र ही "नारायण पर्व" या "नारयण कवच" कहा जाता है. इस मंत्र (नारायण कवच) का सिद्ध करने से अनिष्ट का निवारण होता है, तथा अधिक सुखमय जीवन की प्राप्ती होती है, और अंतमें साधक को भी परमगति मिल जाती है.

इसलिए श्री प्रसन्नवेकटदासजी ने भगवान की महिमा को ध्यान में रखकर, इसका लाभ सर्व सामान्य जनता को पहुंचाने के पवित्र उद्देश्य से, इस नारायण पर्व का संस्कृत से कन्नड भाषा में रूपांतरण किया, और इस रूपांतरित काव्य का नाम "नारायण पंजरा" रखा.यह नारायण पिंजरा 41 छंदोंका खंड काव्य है.उनके अनेक खंड काव्योमे यह काव्य विशेष रूप से महत्वपूर्ण है. "नारायण पिंजरा" में श्री प्रसन्नवेंकटदासजी विष्णु भागवान को सर्वोत्तम तत्व मानते हुए,सर्व गुण परिपूर्ण,सर्व प्रकार से निर्दोष, सृष्टि–स्थिति–लय के नियमन करने वाले इत्यादि महान गुणों से युक्त मानते हुए, भगवान के ही अनेक पुराण प्रसंगों के विभिन्न अंगों का विवेचन किये हैं.इस नारायण पिंजरा के 41 छंदों में से प्रथम 28 छंदो में श्री प्रसन्नवेकटदास्जी ने भगवान के विभिन्न अवतारों का और इन की विशिश्ट महिमा का वर्णन किया है.29 से 41 छंदोंमें वे आत्म निवेदन और प्रार्थनाओंको भक्ति भावसे लिखने का प्रयत्न किये हैं.

नारायण पिंजरा के प्रारंभिक पद्यमें नारायण शब्द का विवरण, महत्व एवं इसका परिणाम दर्शाया गया है.श्री नारद मुनि के द्वारा एकमेव 'नारायण' शब्द के जप से समस्त नरक वासियोंको जागरण कर उनका परित्राण करके, उनको नरक से मुक्ति दिला कर, स्वर्ग मे स्थान उपलब्ध कराने का प्रसंग दिखाया है.इस के पश्चात नारायण पिंजरा में श्रीमद्भागवत के आठवा स्कंधों तक वर्णन किये हुए भागवान के विविध अवतारों के अनुमान और निष्कर्ष निवेदन किया गया है."शिष्ट परिपालन और दुष्ट विनाश"इस तत्व का प्रतिपादन किया गया है.गजेंद्रमोक्ष, मत्स्य, कूर्म, हयग्रीव, वराह, वामन, भार्गव, कपिल इत्यादि अनेक भगवान के अवतारों में दुष्टों के विनाश और धर्म संस्थापक कार्य का वर्णन किया. इस के पश्चात नारायण पिंजरा में भगवान श्रीराम की कथा यानि रामलीला और श्रीकृष्ण की कथा अर्थाय कृष्णालीला का वर्णन किया है.परमेश्वर के महात्म ज्ञान को संक्षेप में समझाने में इस खंडकाव्य को पर्याप्त प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है, और यह खंड काव्य निसंदेह रूप से कन्नड भाषा में नारायण पर्व का संपूर्ण अर्थ लाने में यशस्वी हुआ है.भारतवासियों में श्रीराम और श्रीकृष्ण भगवत अवतार से अनेक प्रसंग बहुत जुडे हुए हैं.इस बात का ध्यान रखते हुए, सामान्य जनता को सात्विक मूल्यों को समझाने में, श्री प्रसन्नवेंकटदासजी इस खंड काव्यमें श्रीराम और श्रीकृष्ण के द्वारा संपादित किए गये अप्रतिम, जनहित कार्यों का ध्यानपूर्वक उल्लेख करते हैं. मर्यादा

पुरुषोत्तम श्रीराम के जीवन से सारे मानवता को संपूर्ण मार्गदर्शन प्राप्त होता है तो, दुसरी ओर श्रीकृष्ण के न्यायपुर्ण कार्यों से सब साधकों का भय निवारण और दुष्टों का विनाश का प्रतिपादन बताया जाता है। गीताचार्य भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता ग्रंथ मानवता का जीवन उपयोगी ग्रंथ है और आज भी ज्ञानदीप की तरह प्रज्वलित है.

इस नारायण पिंजरा काव्य संग्रह के अंतिम पद्योंमें श्री प्रसन्नवेंकटदासजी अपने आत्म निवेदन का चिंतन करते हैं.इस दु:ख भरे संसार में से मुक्ति पाने के लिए सब साधकों के और अपने स्वयं के लिए भगवत प्रसाद की आशा करते हैं.कलियुग में हरिनाम ही एकमेव देव पूजा है.इसलिए सदा भगवन्नाम कानो में सुनने का और मुख से उच्चारण करने का आशा करते हैं.इस विश्व में भगवान ही एकमेव मित्र, बंधु तथा हितचिंतक है, इस के अलावा दुसरा कोई हमारा साथी नहीं है.दिन का हर क्षण भगवन्नाम के उच्चारण अर्थात नामस्मरण या जप से वंचित न रहें, इस का अनुरोध भी करते हैं. इसलीए वे "दास–ईश" भाव में संपुर्ण विश्वास रखते हुए, सर्व समर्पण भावसे अपने इष्टदेव भागवान श्री वेंकटनाथ से प्रार्थना करते हैं, कि उन्हे इस दुनिया से मुक्ति प्राप्त हुए भगवद भक्तों का संग ही सदैव मिले.

इस खंडकाव्य का नाम "नारयण पंजरा"क्यों रखा गया है?यह एक चिंतनीय विषय है.सामान्य अर्थ में 'पिंजरा एक खाली सीमित जगह" लिया जाता है.जैसे शेर का पिंजरा ' या 'तोता का पिंजरा, 'चिडिया का पिंजरा इत्यादि, किंतु इस अभिप्राय से तो यह अर्थ है कि,पिंजरे में शेर है, तोता है, चिडिया है, जिस का नियंत्रण पिंजरे के मालिक अर्थात मनुष्य होता है.लेकिन 'नारायण पिंजरा" का अर्थ इस प्रकार नहीं कर सकता है क्यों कि, भगवान नारायण का नियामक मनुष्य हो नहीं सकता है.यह असंभवनीय और अनुचित है, कि जब भगवान नारायण स्वयम सर्वतंत्र स्वतंत्र,सर्वगुण परिपूर्ण, सर्वोत्तम, सर्व नियंत्रक इत्यादि सद्गुणों से संपन्न है.इसलिए नारायण पिंजरा का अर्थ नारायण निर्मित पिंजरा है,जिस का प्रवेश से जीव को भव सागर से मुक्ति मिल जाती है.इसलिऐ इस सत्य को पहचानकर मनुष्य भागवान नारायण से जॊडना स्थापित करना अवश्यक है.निस्वार्थ तथा सर्व समर्पण भाव से भगवद्भक्ति करना ही, भागवान का सामिप्य को ले जाता है.इस प्रकार साधना करने से भगवान मनुष्य को पूर्ण मुक्ति देने की कृपा करते हैं.श्रीप्रसन्नवेंकटदासजी इस खंडकाव्य में भगवान से प्रार्थना करते हैं कि,भव–सागर से मुक्त हुए भक्तों का संग उनको अवश्य मिले, अर्थात मुक्तों के संग से जीवन मुक्ति अपने आप हो जाता है.इसलीए नारायण पिंजरा एक भगवान से रक्षित और आनंदमय प्रदेश है, जिधर केवल मुक्त जीवी रहते हैं,जिन पर भगवद्कृपा

हुआ है.श्री दासजी का 'नारायण पंजरा' काव्य इस विचार का प्रतिपादन करता है.इसलिए 'नारायण पंजरा' का जगह देव का स्वेद से बन गया गिरिजा नदि में डूबे हुए संतों का प्रदेश है.इस काव्य संग्रह में यही श्री दासजी के अभिप्राय है.

निन्न बेवर्होळेयल्लेन्न मुळुगिसि,

नारायण नमो नारायण

निन्नव ना निन्नवर कैलि कोडु गडागड

नारायण नमो नारायण

आगे वे अपने आप को भगवद्कृपाटाक्ष बनने के इच्छा प्रकट करते,मुक्त लोगों का संग में शामिल करने के लिए भगवान से अनुरोध करते हैं.इस सुरक्षित आनंद भरि पिंजरे में सभी प्रवेश करना चाहते हैं.किंतु यह केवल भगवत प्रसाद से ही जीव को मिलता है, जिसके लिऍ जन्म जन्म से साधन करना पडता है.अंत में दैवज्ञान के साथ दैवकृपा केलिए श्रीदासजी के पुकार हृदयस्पर्शी है.'ईश–दास'भावना को ध्यान में रखते हुए,जीव मुक्ति केलिए वे विज्ञापन इस प्रकार व्यक्त करते हैं.

एनरियदव नानु, नीने परगति,

नारायण नमो नारायण

प्राणनिनगर्पिसुवे , प्रसन्न वेंकटकृष्ण,

नारायण नमो नारायण

भगवदज्ञान जानते हुए विनमृता से स्वयम अज्ञानि कहते हैं तथा सर्व समर्पण भक्ति भाव से भगवान वेंकटनाथ ही परगति देयक जैसे संबोधित करते है.इसलिए यह सिद्ध है कि,श्रीप्रसन्नवेंकटादासजी को इस नारायण पिंजरा में प्रवेश मिल चुका है.

इन विचारको ध्यान रखते हुए श्रीप्रसन्नवेंकटदासजी के मार्गदर्शन में "नारायण पिंजरा" को मनन करके, अभ्यास और अनुष्टान में लाते हैं तो, भगवत प्रसाद की प्राप्ति होकर साधक का मुक्ति पा जाना, निसंदेह रूप से संभव है.

॥ श्रीकृष्णार्पणमस्त ॥

4 श्री तात्प्राप्त सुविज्ञानं श्रीशैक निरतं सदा ।

प्रसन्नवेंकटार्योमे भूयात सर्वार्थ सिद्धिये॥

श्री प्रसन्नवेंकटदासाचार्य रचित

नारायण पंजरा

(हिंदी भावानुवाद)

नारायणाय नमो, नारायणाय नमो

नारायणाय नमो नारायणाय,

नारदजी के 'नारायण' शब्दसे नरकवासी पावन,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ प ॥

मदोन्मत गज का अवसान में उसे बचाया,

नारायणाय नमो नारायण,

प्रह्लाद की एकांत निष्ठा से प्रसन्न होगया,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 1 ॥

पृथ्विचोर को अंत करके भूदेवी का उद्धार किया,

नारायणाय नमो नारायण,

हरिभक्त पृथु चक्रवर्ति को प्रकट हुए,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 2 ॥

शिव–वर से शिवजी को जलानेवालों को जलाया,

नारायणाय नमो नारायण,

सुशील अंबरीष के भक्तिभरि वृत को सफल किया,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 3 ॥

मत्स्यरूप में सत्यवृत को मोक्षप्राप्त तत्त्व बताया,

नारायणाय नमो नारायण,

हरण हुए मुखग्राहित वेद को ब्रह्माजी को लौटाया,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 4 ॥

अतृप्त देवेंद्र को समग्र परमार्थ बताया,

नारायणाय नमो नारायण,

सुरेंद्र का भय मिटाया, ध्रुव को अमर बनाया.

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 5 ॥

पापि अजमिळ को अनिष्ट फलों से बचाया.

नारायणाय नमो नारायण,

महिदास रूप से माताजी को तत्त्वोपदेश दिया,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 6 ॥

पाद प्रहार किए भक्त मुनि को क्षमा भाव से अपनाया,

नारायणाय नमो नारायण,

मुनि शापित दगडबनी स्त्री को पादस्पर्श से मुक्त किया,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 7 ॥

असुरों से यज्ञ की रक्षा से मुनिके अभीष्ट पूरा किया,

नारायणाय नमो नारायण,

शिवधनुष तोडके जानकि का वरण किया.

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 8 ॥

शुभकपीश(सुग्रीव) को अभय प्रदान कर स्नेह बढाया,

नारायणाय नमो नारायण,

वायुपुत्र के अनुमोदन से शुभकंठ के भय मिटाया,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 9 ॥

शरणागत विभीषणको लंकाधिपति नियुक्त किया,

नारायणाय नमो नारायण,

शरमात्र से रावण को वधकर सुरों के कष्ट दूर किया,

नारायणाय नमो नारायण, , ॥ 10 ॥

अवधि पूर्व जाकर भातृ भरत को अग्निप्रवेश से रोक लिया,

नारायणाय नमो नारायण,

अवतार संपूर्ण में परमधाम जाकर देवताओं का आनंद बढाया,

नारायणाय नमो नारायण, , ॥ 11 ॥

अमिताग्नि पीकर गिरि उठाकर व्रज की रक्षा किया,

नारायणाय नमो नारायण,

विषभरा कालिया मथन में नाग पत्नियों का निवेदन सुनलिया,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 12 ॥

याज्ञिकों की सतियों का अन्न सेवा स्वीकार किया,

नारायणाय नमो नारायण,

यज्ञ भोक्ता, यज्ञ शरीर, यज्ञ पालक यज्ञ शील,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 13 ॥

गोपिस्त्रीयों के रासक्रीडा में पादस्पर्श से विहार किया,

नारायणाय नमो नारायण,

"गोपिजनजार" "नवनीत दधिचोर" बन गया,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 14 ॥

बांसुरि गायन प्रिय,चंद्रकुलोद्भव कृष्ण,

नारायणाय नमो नारायण,

शिष्ट वंश परिपालक, दुष्ट वंश नाशक,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 15 ॥

अक्रूर वंदित, कंसारि, कुब्जा रमण,

नारायणाय नमो नारायण,

अनाचार पीडित माता–पिता का भय निवारक,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 16 ॥

आदिति कुंडल दाता, असुरपुत्र भगदत्त के वरदाता,

नारायणाय नमो नारायण,

अधिपतियों के अधिपति, रुक्मिणि सत्यभामा रमण,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 17 ॥

शिव वंदित पाद, सांदीपोद्धव प्रिय,

नारायणाय नमो नारायण,

शंबरासुरारि जनक, यज्ञ पूजाग्रणि,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 18 ॥

पांडवप्राण, द्रौपदि मानरक्षक,

नारायणाय नमो नारायण,,

भूभारी पौंड्रक,शैगाल तथा कौरव नाशक,

नारायणाय नमो नारायण,, ॥ 19 ॥

गर्भस्थ अभिमन्युसुत का जीवनदाता.

नारायणाय नमो नारायण,,

पांडव कुलोद्धार में अभय हस्तदाता.

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 20 ॥

गरुड गंधर्व, किन्नरों द्वारा स्तुति से प्रसन्न,

नारायणाय नमो नारायण,

देवी लक्ष्मी के साथ शेषाद्रिवासि,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 21 ॥

शंख चक्र गदाब्ज युक्त, श्री वत्स हृदय शोभस्थ,

नारायणाय नमो नारायण,

असंख्य अभूषणों से भूषित, अव्याकृतशील.

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 22 ॥

मत्स्य,कूर्म,वराह,नृसिंह,वामन,भार्गव संभव,

नारायणाय नमो नारायण,

राम,कृष्ण,बुद्ध,कल्की,कपिल,दत्त अवतीर्ण,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 23 ॥

स्वामि पुष्करणि स्थित गंगा जल अभिषिक्त,

नारायणाय नमो नारायण,

स्वामि भूवराह वैकुंठनाथ विश्वेश,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 24 ॥

षाट्कॊटि तीर्थयुत पाद भूषित,श्रीभूरमण,

नारायणाय नमो नारायण,

षट्कमल निलय,चिन्मय,चिदगुणार्णव,

नारायणाय नमो नारायण,, ॥ 25 ॥

भक्ताभिमानि,भवदूर,भक्त स्वामी,

नारायणाय नमो नारायण,,

भक्तवत्सल,दयानिधि,परात्पर कृष्ण,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 26 ॥

भूवैकुंठ मंदिर वासी,श्री श्रीनिवास,

नारायणाय नमो नारायण,

ज्ञानप्रीत,ज्ञानकर्त,ज्ञानदाता,ज्ञानपूर्ण,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 27 ॥

आदिनाथ, अप्रमेय. पुरुषोत्तम,

नारायणाय नमो नारायण,

आदि मध्य अंत रहित, आद्य मूर्ति विष्णु,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 28 ॥

जीवित रहना है तो आपके संकीर्तन कर दे,

नारायणाय नमो नारायण,

ज्ञानियों का संग देकर मेरा उद्धार कर दे,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 29 ॥

कान मे तथा मुख में सदैव हरिनाम स्मरण हो,

नारायणाय नमो नारायण,

न विस्मरण दो हरिनाम का, तथा हरि चरण का दर्शन दो,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 30 ॥

भव भव में उबलते, तडपते थखा हूं,

नारायणाय नमो नारायण,

ब्रह्मादि तथा गजराज के अभयदाता मुझे बचाना,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 31 ॥

माता,पिता,बंधु तथा सठी संबंधि सर्व आप ही हैं,

नारायणाय नमो नारायण,

धर्मनीति में अज्ञानिं, हरिस्मरण एक ही उपाय,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 32 ॥

तन अनित्य, मन अनियंत्रित

नारायणाय नमो नारायण,

न पुत्र, न पत्नि/पति, ना कोई अंत्य समय में साथी,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 33 ॥

दोषयुक्त सागर हूं, अधीर हूं,

नारायणाय नमो नारायण,

दास पालक, सेवकों के संजीव,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 34 ॥

आपके विग्रह को हरपल निहारता हूं

नारायणाय नमो नारायण,

बिंब दर्शन का स्तोत्र कब मैं करु?

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 35 ॥

आपके स्वेद तीर्थ में मुझे निर्मल करो,

नारायणाय नमो नारायण,

मैं आपका,आपकों का संग में शीघ्र सौंप दे,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 36 ॥

वारि मे वराह,स्थल में वामन बनकर रक्षा करो,

नारायणाय नमो नारायण,

अरण्यमे नृसिंह, अन्य क्षेत्रमें केशव बनकर पालन करो,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 37 ॥

सत्कुलजाता हूं, किंतु सदाचार न जाना,

नारायणाय नमो नारायण,

सत्कर्मो से वंचित है मेरा जीवन,

नारायणाय नमो नारायण, , ॥ 38 ॥

अशक्य है एक दिन के असंख्य कुकर्मों का फल भोगना,

नारायणाय नमो नारायण,

साष्टांग प्रणाम आपको, मुझे पालना, पालना, पालना,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 39 ॥

मध्वेश,मध्वप्रिय,मध्वमत परिपालक,

नारायणाय नमो नारायण,

गुरुमध्व स्तुत्य, मध्वार्चित पादाब्ज हरि,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 40 ॥

अनपढ, अननुभवि मै, परमगतिदाता आप ही,

नारायणाय नमो नारायण,

प्राण समर्पण आपको,हे प्रसन्न वेंकटकृष्ण,

नारायणाय नमो नारायण, ॥ 41 ॥

श्री प्रसन्न वेंकटदासजी रचित 'नारायण पंजरा' का
हिंदी भावानुवाद संपूर्ण

॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

5 ग्रंथ ऋणी

1] डा. आर जि गुडि "दास साहित्य" पि एच डि प्रबंध.

2] डा. आर एस मुगळि "कन्नड साहित्य चरित्रे".

3] डा. वेदव्यासाचार्य के हुलि "कर्नाटक हरिदासरु" पि एच डि प्रबंध.

4] श्री.श्रीनिवास एस मठद "नारायण पंजर" संदर्भानुसार अर्थ विवरण.

5] सौ. रेखा काखंडकि "श्री प्रसन्न वेंकट विजय" जीवन आधारित कादंबरि.

Note: Here the title 'Narayana Panjara' is maintained, as the words of Dasaru. The meaning of panjara should be taken as pinjara.